हिंदी विश्व

विश्व हिंदी सम्मेलन
फ़िजी, 2023

बुधवार, 15 फरवरी, 2023 फिजी में आयोजित 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन पर केंद्रित दैनिक समाचार पत्र स्वागत अंक

भारतवंशियों को अपनी संस्कृति से जोड़े हुए है हिंदी : द्रौपदी मुर्मू

नादी, 15 फरवरी, 2023। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन की सफलता की कामना करते हुए कहा है कि हर्ष का विषय है कि हिंदी भाषा न केवल दुनिया के अलग–अलग देशों में जा बसे भारतवंशियों को अपनी संस्कृति और परंपरा से जोड़े हुए है बल्कि सकल जगत को भारतीय जीवन दर्शन के अनुरूप जीने की प्रेरणा भी देती है। राष्ट्रपति ने 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर जारी अपने शुभकामना संदेश में कहा है कि भारत सरकार द्वारा फिजी में आयोजित किए

जा रहे 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन से दुनियाभर के हिंदी प्रेमियों, हिंदी सेवियों और हिंदी विद्वानों और लेखकों को हिंदी की दशा–दिशा पर एक मंच प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि हिंदी न सिर्फ भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण संपर्क भाषा है बल्कि विदेशों में भारतीयों की पहचान से भी जुड़ी हुई है। हिंदी भारत की महान संस्कृति की संवाहिका है। कोविड और जलवायु परिवर्तन जैसी प्राकृतिक आपदाओं तथा वैश्विक मंदी के दौर में आज विश्वबंधुत्व और वसुधैव कुटुम्बकम् जैसे भारतीय दर्शन के सूत्रवाक्यों को विश्व द्वारा अपनाए जाने की सबसे ज्यादा जरूरत है।

विश्व बंधुत्व के भाव से जुड़ी है हिंदी : नरेंद्र मोदी

नादी, 15 फरवरी, 2023। भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विदेश मंत्रालय द्वारा फिजी में आयोजित किए जा रहे 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सम्मेलन के आयोजकों, प्रतिभागियों व सभी हिंदी–प्रेमियों को भावी प्रयासों के लिए हार्दिक शुभकामना दी हैं। श्री मोदी ने विश्व हिंदी सम्मेलन के लिए जारी अपने शुभकामना संदेश में कहा कि विविधता से परिपूर्ण हमारे देश में लोगों के बीच आपसी संवाद स्थापित करने में हिंदी की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। हिंदी की इसी विशेषता के कारण महात्मा गांधी जी का मानना था कि यह राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने में अहम सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी की उन्नत, भारत के मूल्यों के प्रसार के साथ–साथ

विश्वबंधुत्व के भाव से भी जुड़ी है। हमारी गौरवशाली संस्कृति व संस्कारों को तकनीक के इस दौर में विभिन्न माध्यमों से दुनिया के हर हिस्से में पहुँचाने में हिंदी का अहम योगदान रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आजादी के अमृतकाल में देश पंचप्राणों में शामिल

'विरासत पर गर्व' और 'गुलामी की मानसिकता से मुक्ति' के भाव के साथ विकास के पथ पर अग्रसर है। हमारा देश अनेक भाषाओं व संस्कृतियों की जननी है और यह समृद्ध विरासत हमें सतत प्रेरणा देती है। ऐसे ही गुलामी की मानसिकता से मुक्ति के लिए आपसी संवाद और परस्पर समन्वय को सशक्त करने में, अमृतकाल में भारतीय भाषाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहनेवाली है।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि सम्मेलन में हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने, इसे समृद्ध करने और अधिक –से–अधिक लोगों को इससे जोड़ने पर विचारपूर्ण चर्चा होगी। सम्मेलन का विषय 'हिंदी–पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक' अत्यंत प्रासंगिक है।

फिजी में आज 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन का शुभारंभ

नादी, 15 फरवरी, 2023। 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन विदेश मंत्रालय द्वारा फिजी सरकार के सहयोग से 15 से 17 फरवरी को फिजी में हो रहा है। विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन 3–4 वर्ष में किया जाता है। इस बार वैश्विक महामारी के कारण सम्मेलन के आयोजन में साढ़े चार वर्ष का अंतराल आया है। विश्व हिंदी सम्मेलन की संकल्पना हिंदी को भावनात्मक धरातल से उठाकर व्यापक स्वरूप प्रदान करने और यह रेखांकित करने के उद्देश्य से की गई थी कि हिंदी केवल साहित्य की भाषा नहीं बल्कि आधुनिक ज्ञान–विज्ञान को अंगीकार करके अग्रसर होने में सक्षम भाषा है। 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन की थीम 'हिंदी–पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक' रखी गई है। इसमें जहाँ एक ओर हम अपनी परंपरा और प्राचीन ज्ञान के प्रति सम्मान दर्शा रहे हैं, इसके साथ ही दुनिया को यह बताना चाहते हैं कि हिंदी केवल साहित्य की भाषा नहीं बल्कि आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के साथ चलने और नई तकनीकी से कदम मिलाने में सक्षम भाषा है।

12 वें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन फिजी में करने का निर्णय मॉरीशस में आयोजित 11 वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान लिया गया था। फिजी में सम्मेलन का उद्घाटन नादी शहर के 'देनाराउ आइलैंड कन्वेंशन सेंटर' में 15 फरवरी को सुबह 10 बजे भारत के विदेशमंत्री, श्री सुब्रमण्यम जयशंकर के साथ फिजी के प्रधानमंत्री श्री सितिवेनी राबुका करेंगे। समापन 17 फरवरी को फिजी के उप–प्रधानमंत्री श्री बिमन प्रसाद करेंगे। सम्मेलन में विदेश राज्यमंत्री श्री वी. मुरलीधरन और गृह राज्यमंत्री श्री अजय मिश्र के साथ भार के कई सांसद भी होंगे। इस सम्मेलन के आयोजन में राजभाषा विभाग का सहयोग सराहनीय रहा है।

सम्मेलन में भारत के लगभग सभी राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों की प्रतिभागिता रहेगी। भारत के दक्षिण और उत्तर पूर्वी क्षेत्रों पर इस सम्मेलन में विशेष रूप से बल दिया गया है। इन क्षेत्रों के अनेक विद्वान सम्मानित किए जाएंगे और वक्ताओं के रूप में भी शामिल होंगे। उद्घाटन सत्र में फिजी सरकार द्वारा जारी इस सम्मेलन के स्मृति चिह्न के रूप में एक डाक–टिकट का लोकर्पण किया जाएगा तथा सम्मेलन स्मारिका सहित अनेक पत्रिकाओं के सम्मेलन विशेषांकों का लोकार्पण भी किया जाएगा। इस सम्मेलन के लिए भारत से लगभग 250 लोगों का सरकारी प्रतिनिधिमंडल फिजी जाएगा। अनके हिंदी विद्वान विदेशों से भी आएंगे। इन हिंदी विद्वानों में भारतीय मूल के भी हैं और विदेशी मूल के भी। लगभग 50 देशों के प्रतिनिधि शामिल होंगे। देश और विदेश के विद्वानों को, जिनका हिंदी के प्रति प्रमुख योगदान रहा है, सम्मानित किया जाएगा। ध्यातव्य है कि भारत और फिजी के राजनयिक संबंध 1948 में स्थापित हुए किंतु फिजी के साथ भारत का एक विशेष संबंध भी है जो इतिहास के पन्नों में दर्ज है। 143 वर्ष पहले भारत से एक संविदा के तहत हजारों श्रमिकों को फिजी ले जाया गया था।

आज उन हिंदुस्तानियों की तीसरी, चौथी व पांचवी पीढ़ियाँ वहां रहती हैं जो अपनी भारतीय विरासत पर गर्व करती हैं। वे अपनी भाषा व संस्कृति के प्रति समर्पित हैं।

फिजी में विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन उन पूर्वजों के प्रति विनम्र श्रद्धांजलि है जिनके कारण हिंदी फिजी में अपना स्थान बनाए हुए है।

फिजी ने सम्मेलन आयोजित कर इतिहास का एक नया अध्याय रचा : एस. जयशंकर

नादी, 15 फरवरी, 2023। भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा है कि हिंदी के वैश्विक स्वरूप व प्रसार की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति की यात्रा फिजी में अपने बारहवें पड़ाव पर पहुँच रही है। लाखों प्रवासी भारतीयों और भारतवंशियों से भारत के जनमानस का भावनात्मक संबंध स्थापित करनेवाले इस विश्व हिंदी सम्मेलन के आयोजन में फिजी देश की सहभागिता से इतिहास का एक नया अध्याय रचा जा रहा है।

विश्व हिंदी सम्मेलन के लिए जारी अपने शुभकामना संदेश में एस. जयशंकर ने कहा कि भाषा केवल संपर्क और संचार का माध्यम नहीं होती, न केवल रोजगार प्राप्त करने का साधन होती है बल्कि भाषा किसी सभ्यता की अस्मिता और उसकी संस्कृति की वाहक होती है।

उन्होंने कहा कि फिजी में हिंदी की स्थिति इस तथ्य का स्पष्ट प्रमाण है। 1879 में भारतीय श्रमिकों के साथ फिजी पहुँची हिंदी आज वहाँ की आधिकारिक भाषाओं में शामिल है। इसके लिए फिजी बधाई का पात्र है। भारत के विदेश मंत्री ने कहा कि विश्व हिंदी सम्मेलन हिंदी के प्रति हमारी साझी प्रतिबद्धताओं को दोहराने का समय है।

उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन हिंदी की वैश्विक स्थिति का जायजा लेने का, देश–विदेश में हिंदी के विशेषज्ञों व हिंदी प्रेमियों के विचारों को उनकी लेखनी के माध्यम से जानने का अवसर है।

विदेश मंत्री ने कहा कि अपनी

12वें विश्व हिंदी सम्मेलन का लोगो जारी करते हुए भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर

भाषा से भावनात्मक संबंध स्थापित करने की यह यात्रा अविराम चलती रहे और आनेवाले समय में अधिकाधिक जनमानस को अपने साथ जोड़े और संपूर्ण विश्व समुदाय को प्रेरित करे, ऐसी मेरी कामना है।

कृत्रिम मेधा के साथ कदमताल करने में हिंदी समर्थ : वी. मुरलीधरन

नादी, 15 फरवरी, 2023। भारत के विदेश राज्य मंत्री वी. मुरलीधरन ने 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर जारी अपने शुभकामना संदेश में कहा है कि विश्व हिंदी सम्मेलन प्रशांत क्षेत्र में स्थित सुरम्य द्वीप फिजी में पहली बार आयोजित किया जा रहा है। 1975 में नागपुर से आरंभ हुए इस उत्सव ने 48 वर्ष की यात्रा में ग्यारह पड़ाव पार किए हैं। 12वें विश्व हिंदी सम्मेलन को फिजी में आयोजित करने का प्रस्ताव 18–20 अगस्त, 2018 को पोर्ट लुई, मॉरीशस में आयोजित 11वें विश्व हिंदी सम्मेलन में रखा गया था। हमारी सरकार तथा फिजी सरकार ने इसके लिए सहमति प्रदान की, यह खुशी की बात है। वैश्विक महामारी के कारण कुछ समय के लिए इसके आयोजन संबंधी कार्रवाई की गति मंथर अवश्य पड़ी, लेकिन हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता ने इस संकल्प की सिद्धि के लिए आधिकारिक कार्रवाई को जारी रखा। उन्होंने कहा कि इस संबंध में ठोस कदम उठाए जाने के लिए पहली बैठक 27 अक्तूबर, 2022 को आयोजित हुई, जिसमें व्यवस्थित एवं निर्बाध रूप से सम्मेलन के आयोजन के लिए तीन उप–समितियाँ गठित की गईं और उनके कार्य निर्धारित किए गए। इस बार सम्मेलन का मुख्य विषय 'हिंदी–पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक' रखा गया है। साहित्य और भाषा पर चर्चा से आगे बढ़कर आधुनिकता की पैठ से सामंजस्य बिठाने के लिए यह आवश्यक है कि हिंदी के सामर्थ्य को दर्शाया जाए। यही कारण था कि सम्मेलन के लिए यह अनूठा विषय निर्धारित किया गया। विदेश राज्य मंत्री ने कहा कि हम चाहते हैं, हमारी युवा और आगे आनेवाली पीढ़ी यह जानें व समझें कि हिंदी एक सशक्त भाषा है और कृत्रिम मेधा के साथ कदमताल करने में समर्थ है। हिंदी सामंजस्य की भाषा है, जो न सिर्फ अन्य भाषाओं के साथ सामंजस्य बिठाती है, उन्हें हृदय से लगाती है बल्कि ज्ञान–विज्ञान के सभी नए पहलुओं पर कार्य करने का माध्यम भी हिंदी किसी की राह में बाधा नहीं है, यह तो प्रगति पथ पर अग्रसर करनेवाली शक्ति है। आज हमारे पास हिंदी से संचालित एलेक्सा है, अन्य स्वचालित मशीनें हैं, रोबोट हैं, चौटबॉट हैं, जो हिंदी भाषा समझते हैं। वर्तमान समय में भाषाओं के विकास, उसके संचार के लिए कृत्रिम मेधा का साथ समय की माँग है। किसी भी भाषा को जीवित रखने के लिए उसे भावी पीढ़ी को सौंपना सबसे ज्यादा जरूरी है। यह तभी संभव है, जब हम उसे तकनीक व प्रौद्योगिकी के साथ कदमताल करने में सक्षम बनाएँ। इस सम्मेलन का विषय उसी दिशा में एक कदम है। 12वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन इस शक्ति को सही रूप में विश्व पटल पर रेखांकित करे, ऐसी मेरी कामना है।

सम्मेलन स्थल

भारत हमारा दूसरा घर है : कमलेश एस. प्रकाश

12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के संदर्भ में फिजी में भारत के उच्चायुक्त कमलेश एस. प्रकाश से प्रसार भारती के सलाहकार उमेश चतुर्वेदी की बातचीत

कमलेश एस. प्रकाश भारतीय मूल के फिजी के राजनयिक हैं। उनके पूर्वज उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के रहने वाले थे। यहां से वे रोजी–रोजगार के तलाश में फिजी गए और फिर वहीं के होकर रह गए। कमलेश जी कहते हैं कि भारत में आकर नहीं लगा कि वे किसी दूसरे देश में हैं। उनका मानना है कि हिंदी भारत और फिजी को जोड़ने का पुल है। फिजी में हो रहे विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर उनसे आकाशवाणी के लिए विशेष बातचीत की, उमेश चतुर्वेदी ने। प्रस्तुत है बातचीत के संपादित अंश :

फिजी में हिंदी की क्या स्थिति है?

हिंदी में जो बारहवां विश्व हिंदी सम्मेलन हो रहा है, उसकी वजह से फिजी के लोग बहुत खुश हैं। उनका मानना है कि दुनियाभर से हिंदी के सम्राट लोग फिजी में जुट रहे हैं। लोगों को लगता है कि हिंदी को लेकर फिजी में बहुत बात होगी तो इससे लोग बेहद उत्साहित हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि 1879 में पहली बार अंग्रेजों के अधीन बनकर भारत से लोग बंधुआ मजदूर बनकर फिजी गए थे। करीब 61 हजार लोगों को भारत से ले जाया गया था तो फिजी में हिंदी की शुरुआत इन्हीं लोगों के जरिए हुई। हमें खुशी है कि हमारे पूर्वजों के साथ फिजी में संस्कृत, धर्म, वेद, कुरान आये और अभी भी चल रहे हैं। फिजी में भारतीय मूल के लोगों की संख्या 38 प्रतिशत है। आप कह सकते हैं कि ये संख्या हिंदी बोलती और लिखती है। लेकिन यह भी है कि इनके प्रभाव से बहुत सारे फिजी के लोग जो आदिवासी हैं, चीनी हैं, जो यूरोपीय मूल के लोग हैं, वे सब हिंदी समझते हैं, बोलते हैं। इस तरह कह सकते हैं कि फिजी में करीब साठ प्रतिशत से ज्यादा लोग हिंदी बोलते–समझते हैं। हिंदी आज सभी स्कूलों में पढ़ाई जाती है। प्राइमरी, ट्रेजरी यानी माध्यमिक से लेकर पीएचडी तक की पढ़ाई हिंदी में हो रही है। कोई चाहे तो फिजी के विश्वविद्यालयों से हिंदी में डिग्री ले सकता है। लेकिन जब तक औपनिवेशिक सरकार थी, हिंदी की आज जैसी स्थिति नहीं थी। तब अंग्रेजी का बोलबाला था। अंग्रेजी में ही काम होता था। उत्तर औपनिवेशिक समाज में भी अंग्रेजी का बहुत प्रभाव रहा। हिंदी तब भी थी, लेकिन तब हिंदी को उत्साहित नहीं करते थे। कहा जाता है कि हिंदी क्यों सीखोगे, क्योंकि वह इन्फीरियर यानी हीनता की भाषा है। ब्रिटिश सरकार के नीचे काम करोगे तो अंग्रेजी में ही काम होगा। हम जब पढ़ते थे तो प्राइमरी स्तर पर कुछ हिंदी पढ़ा था। लेकिन पिछली सदी के सत्तर–अस्सी के दशक तक हिंदी पर ध्यान नहीं था। लेकिन अब की फिजी की सरकार में हिंदी को महत्व दिया गया है। यहां तक कि हमारा 2013 का जो संविधान है, वह अंग्रेजी, इटाकी और हिंदी तीनों ही भाषाओं में है।

आपने बताया कि पोस्ट कोलोनियल यानी आजाद फिजी की सरकार के दौर में हिंदी को लेकर नजरिया बदला है। संविधान तक हिंदी में है। मौजूदा दौर में फिजी में हिंदी को लेकर क्या–क्या योजनाएं चल रही हैं?

आज हिंदी में रेडियो स्टेशन चल रहे हैं। जहां चौबीसों घंटे हिंदी में प्रसारण होता है। टेलीविजन चैनल भी हिंदी के हैं। अलग–अलग समुदायों के अपने हिंदी चैनल हैं। हिंदी बोलने में भी लोगों को अब हिचक नहीं रहती। सरकार भी प्रोत्साहित कर रही है। फिजी में करीब दो हजार से ज्यादा रामायण मंडलियां हैं, जो रामायण और गीता का पाठ करती हैं। वे रामलीला, कृष्णलीला करती हैं। कुरान का भी पाठ होता है। माहौल हिंदी को लेकर बदल गया है।

यानी कह सकते हैं कि फिजी में हिंदी के विकास में, हिंदी को बचाए–बनाए रखने में इन रामायण मंडलियों का बड़ा योगदान है?

बिल्कुल कह सकते हैं कि इन मंडलियों का बड़ा योगदान है। जो भी धर्म आप मानते हो, उसको खुले तौर पर आप मानते हुए, उसके लिए आप हिंदी में पाठ कर सकते हैं। पहले ऐसा माहौल नहीं था। लेकिन अब माहौल बदल गया है। फिजी में जो विश्व हिंदी सम्मेलन हो रहा है, इसी वजह से फिजी सरकार भरपूर मदद दे रही है।

आपने कहा कि फिजी में भारतीय मूल के लोगों की संख्या करीब 38 प्रतिशत है। फिजी की अर्थव्यवस्था में इन लोगों का क्या योगदान है और फिजी सरकार उन्हें कितना महत्व देती है?

फिजी के विकास और अर्थव्यवस्था में भारतीय लोगों का योगदान बहुत बड़ा है। फिजी की अर्थव्यवस्था, कृषि, उद्योग आदि के योगदान में भारतीय मूल के लोगों का योगदान बहुत है। आज फिजी की जो बुनियादी संरचना है, रास्ते हैं, जो बंदरगाह हैं, बिजली की आपूर्ति में भारतीयों का योगदान बहुत है। अस्पताल, स्कूल आदि के निर्माण में इस समुदाय का करीब डेढ़ सौ साल से

योगदान रहा है। आज फिजी की राजनीति, नौकरशाही में भी भारतीय बहुत हैं। मंत्रिमंडल में हैं तो विपक्ष में भी हैं।

आप जैसे लोग राजनयिक भी हैं

बिल्कुल आप कह सकते हैं। यह बदलाव हाल में आया है। जबकि कुछ साल पहले तक ऐसा होना संभव नहीं था?

भारत में एक अभियान चलता रहा है कि दुनिया की चौथे नंबर की भाषा हिंदी की वैश्विक पहचान है। आपको क्या लगता है कि फिजी में विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित होने से हिंदी की वैश्विक पहचान के उद्देश्य में कितनी सफलता मिलेगी?

मुझे लगता है कि हिंदी को इस आयोजन से बहुत सफलता मिलेगी। हिंदी ने टेक्नॉलजी के स्तर पर जो विकास किया है, उसके जरिए भी हिंदी को बढ़ावा मिलेगा। इस सम्मेलन से उन लोगों को प्रेरणा मिलेगी, जो हिंदी बोलने में हिचकते हैं। हिंदी ने जो तकनीकी विकास किया है, उसकी जानकारी लोगों को मिलेगी तो उसकी वजह से भी वैश्विक स्तर पर हिंदी का विकास होगा। वैसे हिंदी को अलग–अलग स्तरों पर स्वीकार्यता मिल चुकी है। उम्मीद कर सकते हैं कि इस सम्मेलन के बाद हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने में भी मदद मिलेगी।

फिजी सरकार और फिजी के हिंदी प्रेमी भारत की हिंदी संस्थाओं और लोगों से किस तरह की उम्मीद, किस तरह के सहयोग की उम्मीद करते हैं?

आपने बहुत सुंदर शब्द का इस्तेमाल किया। सहयोग का। फिजी में बहुत से ऐसे लोग हैं जो हिंदी में काम करना चाहते हैं, लिखना चाहते हैं। फिजी में हो रहे हिंदी सम्मेलन से उन लोगों को प्रेरणा मिलेगी। वे लोगों से मिलेंगे और आगे बढ़कर काम करेंगे। यह हिंदी के विकास के लिए बहुत अच्छी बात रहेगी। अभी हमने पिछले साल यहां से हिंदी में एक पुस्तक प्रकाशित की है, उसमें करीब दस–15 फिजी के लोग शामिल हैं। जब यह पुस्तक छपी तो पता चला कि फिजी में पचास–साठ लोग ऐसे और हैं, जो लिखना, छपना चाहते हैं। उन्हें कोई राह नहीं मिलती। तो फिजी में हो रहे सम्मेलन से उन्हें भी अवसर मिलेगा। वे भारत भी हिंदी सीखने के लिए आ सकते हैं। इसकी भी उन्हें जानकारी मिलेगी।

भारत और फिजी को जोड़ने के लिए हिंदी पुल रही है। आपके पूर्वज भी यहां से। उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर से गये थे। अब भारत में हैं तो हिंदी से आपको किस तरह फायदा मिलता है?

आपने बहुत अच्छा सवाल किया है। हिंदी हमारे यानी भारत और फिजी के बीच की दूरिया मिटा देती है। मैं जब राजदूतों के कार्यक्रमों में जाता हूं तो दूसरे देशों के राजदूत पूछते हैं कि भारत में क्या चल रहा है। यानी हिंदी जानने की वजह से मुझे बहुत फायदा मिल रहा है। फायदा यह भी है कि आप हिंदी में सवाल पूछ रहे हैं और मैं हिंदी में जवाब दे रहा हूं। भारत हमारा दूसरा घर है। मेरे माता–पिता का जन्म फिजी में हुआ। लेकिन वे भी भारतीय ही हैं। क्योंकि हमारे पूर्वज भारत से ही वहां गये। भारत को समझने और भारत के अधिकारियों से संपर्क करने में हिंदी की मेरी जानकारी बहुत सहयोगी है। भारत में काम करके मुझे नहीं लगता कि मैं किसी दूसरे देश में हूं। लगता है कि घर में ही काम कर रहा हूं। मैं ही नहीं, जब भी हमारे लोग दूसरे काम से भारत आते हैं तो उन्हें भी लगता है कि वे दूसरे घर आए हैं।

भारत के लोगों से फिजी के लोगों की क्या अपेक्षाएं हैं..?

मैंने पाया है कि बहुत लोग जानते हैं कि फिजी क्या है। लेकिन बहुत सारे लोग ऐसे भी हैं कि जो फिजी और वहां के इतिहास एवं संस्कृति को नहीं जानते। हम चाहते हैं कि भारत के लोग भी समझें कि हम कहां से गए। हमारा इतिहास क्या है? हमारी संस्कृति को जानें। शायद हमारे इतिहास को यहां पढ़ाया नहीं जा रहा है। हम चाहते हैं कि भारत के लोग हमको भी समझें और हमारा इतिहास भी समझें।

भारत तो आपका दूसरा घर है। फिजी की ओर से भारत के लोगों को कोई संदेश देना चाहेंगे?

भारत हमेशा विश्व शक्ति के रूप में इतिहास में रहा है। भारत कई क्षेत्रों में लगातार आगे बढ़ रहा है। अगर सबके सहयोग से ऐसा ही चलता रहा तो अगले दस–बीस साल में भारत को कोई रोकने वाला नहीं रहेगा और विश्व गुरु के रूप में भारत का जो स्थान था, वह हासिल कर लेगा। भारत की स्थिति से ताकत से प्रशांत महासागर के इलाकों में हमें भी फायदा मिलेगा। भारत की सुरक्षा में हमारी भी सुरक्षा है। हम यही चाहेंगे कि भारत आगे बढ़ता रहे।

नागपुर से नादी तक हिंदी का निनाद

रजनीश कुमार शुक्ल

विश्व हिंदी सम्मेलन की परंपरा का संतरानगरी से एक विशिष्ट संबंध है। नागपुर में वर्ष 1975 में 10–14 जनवरी तक पहला विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया था जिसमें विश्व के 30 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था और सम्मेलन के मुख्य अतिथि के रूप में मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम उपस्थित थे। मॉरीशस के इस हिंदी सेवी प्रधानमंत्री के नाम पर नागपुर में एक सड़क का नामकरण सर शिवसागर रामगुलाम मार्ग के रूप में किया गया है। 15–17 फरवरी 2023 को फिजी के नादी में 12 वां विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। जहां तक विश्व भाषा के रूप में हिंदी की बात है तो 10 जून, 2022 हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के लिए एक ऐतिहासिक दिन साबित हुआ। इस दिन संयुक्त राष्ट्र महासभा में पारित बहुभाषावाद संबंधी एक प्रस्ताव में पहली बार हिंदी भाषा का उल्लेख हुआ। प्रस्ताव में बहुभाषावाद को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषाओं के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, उर्दू, पुर्तगाली, स्वाहिली और फारसी को संयुक्त राष्ट्र की सहकारी कामकाज की भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। यह संयुक्त राष्ट्र के कामकाज के तरीके में एक बड़े परिवर्तन का संकेत है। इस प्रस्ताव में कहा गया है कि संयुक्त राष्ट्र के सभी जरूरी कामकाज और सूचनाओं को इसकी आधिकारिक भाषाओं के अलावा दूसरी भाषाओं जैसे– हिंदी, बांग्ला और उर्दू में भी जारी किया जाए। संयुक्त राष्ट्र महासभा की छह आधिकारिक भाषाएं हैं। इनमें अरबी, चीनी (मंदारिन), अंग्रेजी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनिश शामिल हैं, किंतु संयुक्त राष्ट्र सचिवालय के कामकाज की दो ही भाषाएं हैं– अंग्रेजी और फ्रेंच। बहुभाषावाद को संयुक्त राष्ट्र के बुनियादी मूल्यों में गिना जाता है। इस संदर्भ में एक फरवरी, 1946 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के पहले सत्र में अपनाए गए सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 13(1) का जिक्र करना आवश्यक है। इसमें कहा गया था कि संयुक्त राष्ट्र अपने उद्देश्यों को तब तक प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक कि दुनिया के लोगों को इसके उद्देश्यों और गतिविधियों के बारे में पूरी जानकारी न हो। भारत इस उद्देश्य को प्राप्त करने में संयुक्त राष्ट्र के साथ खड़ा है। वर्ष 2018 से ही भारत संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक संचार विभाग के साथ साझीदारी कर रहा है, जिसका लक्ष्य हिंदी भाषा में संयुक्त राष्ट्र की पहुंच को बढ़ाना और दुनिया भर में हिंदी बोलने वाले लोगों को जोडना है। संयुक्त राष्ट्र की वेबसाइट और इसके इंटरनेट मीडिया खातों के माध्यम से हिंदी में संयुक्त राष्ट्र के समाचार पहले से ही प्रसारित किए जा रहे हैं। जहां तक भारतीय भाषाओं का प्रश्न है तो हिंदी, बांग्ला और उर्दू बोलने वालों का कुल योग किया जाए तो हम मंदारिन बोलने वालों से अधिक हैं। इन भाषाओं को स्वीकार करने से संयुक्त राष्ट्र की पहुंच इन्हें बोलने वाली एक अरब की आबादी तक सीधे बन गई है, लेकिन यह भी ध्यान रखने की जरूरत है कि केवल संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा होने से भारतीय भाषाओं का प्रश्न हल नहीं होता है। जहां तक हिंदी की स्वीकृति का प्रश्न है तो संयुक्त अरब अमीरात की राजधानी अबू धाबी ने ऐतिहासिक फैसला लेते हुए अरबी और अंग्रेजी के बाद हिंदी को अपनी अदालतों में तीसरी आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल कर लिया है। हिंदी को अदालत की तीसरी आधिकारिक भाषा का दर्जा मिलना दुनिया भर में हिंदी को मिल रहे सम्मान की एक और मिसाल है। हिंदी दुनिया में दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। प्रशांत महासागर के द्वीप देश फिजी में हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा दिया गया है। नेपाल, मारीशस, त्रिनिदाद और टोबैगो, सूरीनाम जैसे देशों में भी हिंदी प्रमुखता से बोली जाती है। हिंदी को विश्व भर में लोकप्रिय बनाने और उसे संयुक्त राष्ट्र की एक आधिकारिक भाषा के तौर पर स्वीकार किए जाने की दिशा में प्रयास जारी हैं। इस संबंध में भारत की संसद में पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज का एक वक्तव्य अत्यंत महत्वपूर्ण है। सुषमा स्वराज ने एक सवाल के जवाब में कहा था कि संयुक्त राष्ट्र में हिंदी को एक आधिकारिक भाषा बनाने में सबसे बड़ी समस्या संयुक्त राष्ट्र के नियम हैं। संयुक्त राष्ट्र के नियम के अनुसार संगठन के 193 सदस्य देशों के दो तिहाई सदस्यों यानी 129 देशों को हिंदी को आधिकारिक भाषा बनाने के पक्ष में वोट करना होगा और इसकी प्रक्रिया के लिए वित्तीय लागत भी साझा करनी होगी। इस वजह से हिंदी को समर्थन करने वाले आर्थिक रूप से कमजोर देश इस प्रक्रिया से दूर भागते हैं। भारत सरकार इस संबंध में फिजी, मारीशस, सूरीनाम जैसे देशों से समर्थन लेने की कोशिश कर रही है जहां बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग रहते हैं। जब भारत को इस तरह का समर्थन मिलेगा और समर्थन करने वाले देश वित्तीय बोझ को भी सहने के लिए तैयार हो जाएंगे, तब हिंदी संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा बन जाएगी। इन सभी विसंगतियों के बीच 2014 के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार ने वैश्विक स्तर पर हिंदी को पहचान दिलाई है। कई अवसरों पर भारतीय नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र में हिंदी में अपने वक्तव्य दिए हैं। विश्व मंच पर भारत जितना मजबूत होगा भारत की भाषाएं भी उतनी ही मुखरता से वैश्विक कार्यव्यवहार, व्यापार और राजनय की भाषा के रूप में उभरकर आएंगी। हिंदी को भारत राष्ट्र की राजभाषा के साथ–साथ समस्त भारत के लिए संपर्क भाषा के रूप में भी विकसित करने का यत्न महत्वपूर्ण रहा। उसके सुफल धीरे–धीरे सामने आने लगे हैं। भारत की संसद के दोनों सदनों में हिंदी में कामकाज का प्रतिशत बढ़ा। हिंदीतर भाषाभाषी राज्यों के सांसदों ने भी संसद में अंग्रेजी के बजाय हिंदी में चर्चा को प्रधानता दी। भारत सरकार के विदेशी दौरे में जाने वाले प्रतिनिधि मंडलों में भी हिंदी में बातचीत की प्रवृत्ति भी बढ़ी। संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने अपने विदेश मंत्रालय की वेबसाइट का हिंदी अनुवाद भी प्रारंभ किया। परिवर्तन यहीं तक रुका नहीं। 2022 से भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने हिंदी में याचिका स्वीकार करना प्रारंभ किया। 2021–22 की सत्र से देश की प्रतिष्ठित प्रौद्योगिकी संस्थाओं आईआईटी, एनआईटी आदि में हिंदी सहित भारतीय भाषाओं के माध्यम से पढ़ाई प्रारंभ हुई। आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में विकसित होती हुई भारत के विविध राज्यों और भारत के विविध भाषाओं के बोलने वालों के बीच किसी विदेशी भाषा को संपर्क भाषा के रूप में अस्वीकार करते हुए, हिंदी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राज्य की भाषा, न्याय की भाषा, व्यापार की भाषा और इन सबसे आगे बढ़ते हुए ज्ञान की भाषा के रूप में हिंदी को स्वीकार करना प्रारंभ किया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन के अभियानों के साथ–साथ हिंदी ज्ञान और अनुसंधान की भाषा के रूप में भी विकसित होने लगी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का ध्येय है एक ऐसी पीढ़ी खड़ा करना है जो भारत की सांस्कृतिक परंपरा से ओतप्रोत हो, समीक्षात्मक चिंतन और सृजनात्मक कल्पना से युक्त हो, जिसमें भारत और भारतीय जीवन परंपरा के प्रति गौरव का भाव हो साथ ही साथ भारत को विश्व गुरु के रूप में स्थापित करने का संकल्प भी हो। यह कुछ विशिष्ट संकल्पों से ही संभव हो सकता है। 15 अगस्त 2022 को लाल किले के प्राचीर से भारत के प्रधानमंत्री ने हर भारतीय को पंच प्रण लेने का आह्वान किया जिसमें एक यह भी था कि दासता का कोई चिह्न नहीं रहने देंगे। अगर अंग्रेज शासकों की भाषा अंग्रेजी निरंतरता में जारी रहती है तो दास भाव से मुक्ति प्राप्त करना संभव नहीं है।ज्ञान–विज्ञान, अनुसंधान एवं प्रशासन की भाषा, न्याय, शासन और संचार की भाषा अंग्रेजी ही बनी रहती है तो औपनिवेशिक दासता की मानसिकता से मुक्ति प्राप्त करना कदापि संभव नहीं है। परकीयों की भाषा में स्वराज और स्वबोध का वास्तविक रूप में मूर्त होना, फलवान होना संभव नहीं है। इसके लिए देश को स्वभाषा को स्वीकार करना पड़ेगा। परायी सांस्कृतिक भूमि में स्वबोध संभव नहीं है। अपनी सांस्कृतिक भूमि की निर्मिति केवल स्वभाषा से ही संभव है। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में कामकाज विचार विमर्श गुलामी के सभी दृश्य अदृश्य बिम्बों को मुक्त कर सकता है। भारतीय मेधा को समीक्षात्मक मेधा और सृजनात्मक कल्पना से भर सकता है।

(लेखक महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति हैं)

फिजी के प्रमुख हिंदी सेवी

विमलेश कांति वर्मा

अनुभवानंद आनंद : फिजी के प्रतिष्ठित कहानीकार रोचक शैली तथा सहज प्रवाहमयी भाषा में 8 सामाजिक समस्याओं पर कहानी लेखन शांतिदूत साप्ताहिक में रचनाएँ प्रकाशित।

अमरजीत कौर : फिजी के प्रतिष्ठित उपन्यासकार जोगिन्दर सिंह कंवल की पत्नी अमरजीत कौर की लोक साहित्य तथा लोक शैलियों में विशेष रुचि है। उनकी मातृभाषा पंजाबी है किंतु हिंदी पर भी उनका अच्छा अधिकार है। उनकी कविता की प्रकाशित पुस्तकें 'चलो चलें उस पार' तथा 'उपहार' हैं।

ईश्वरी प्रसाद चौधरी : फिजी शुगर केन ग्रोवर्स कौंसिल के एक सम्मानित सदस्य रहे हैं, किसानों के प्रभावशाली नेता तथा हिंदी के एक प्रतिष्ठित लेखक हैं। उन्होंने कविता के साथ कहानी और निबंध भी लिखे हैं तथा उनकी रचनाएं भारत की अनेक पत्र–पत्रिकाओं में छपी भी हैं। 1987 ई. में चौधरी जी का निधन हुआ।

कमला प्रसाद मिश्र : पं. कमला प्रसाद मिश्र का जन्म 1913 में फिजी में हुआ। मिश्र जी की शिक्षा–दीक्षा भारत में हुई तथा वृंदावन में रहकर उन्होंने हिंदी, संस्कृत तथा अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने उर्दू, अरबी, फ़ारसी तथा पंजाबी भाषा का भी अध्ययन किया। मिश्र जी ने विपुल काव्य साहित्य की रचना की है। मिश्र जी ने 'जागृति' पत्रिका का संपादन किया और 'जय फिजी' साप्ताहिक पत्र के वे संस्थापक संपादक थे। प्रथम और तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन में मिश्र जी ने फिजी का प्रतिनिधित्व किया था। पं. कमला प्रसाद मिश्र भारत सरकार के राष्ट्रीय सम्मान 'पद्मश्री' से सम्मानित भी हुए। सन् 1995 में मिश्र जी का निधन हो गया ।

काशीराम 'कुमुद' : की गणना फिजी के प्रतिष्ठित हिंदी साहित्यकारों के मध्य होती है। कुमुद जी सिंगातो का निवासी थे और कर्मठ हिंदी सेवी थे। वे हिंदी के अच्छे विद्वान तथा सूझ–बूझ वाले संपादक थे। उन्होंने 'प्रवासिनी' पत्र प्रारंभ किया तथा लंबे समय तक उसका संपादन किया। 'किसान मित्र' तथा 'नव किरण' पत्रिकाओं का भी कुमुद जी ने संपादन किया। कुमुद जी ने कविताएं तथा कहानियां दोनों लिखी हैं। 1987 में उनका देहावसान हो गया।

केशवन नायर, एस : फिजी के लब्ध प्रतिष्ठ कहानीकार। अधिकांश रचनाएँ शांतिदूत साप्ताहिक में प्रकाशित हुई हैं।

गुरु दयाल शर्मा : फिजी के जिन विद्वानों और प्रतिबद्ध हिंदी सेवियों ने हिंदी पत्रकारिता को एक ठोस भूमिका और प्रतिष्ठा दी उनमे पंडित गुरु दयाल शर्मा का नाम उल्लेखनीय है। हिंदी के लोकप्रिय पत्र 'शांतिदूत साप्ताहिक' के वे संस्थापक थे और कई दशकों तक उसका उन्होंने सम्पादन किया। हिंदी तथा अंग्रेजी पर उनका अच्छा अधिकार था। 'शांतिदूत साप्ताहिक' में प्रकाशित उनके विविध लेख और संपादकीय उनकी विलक्षण सम्पादकीय योग्यता का परिचय देते हैं।

ज्ञानीदास : 'तारा', 'ज्ञान', 'झंकार' आदि पत्रिकाओं के संस्थापक तथा संपादक ज्ञानीदास फिजी में हिंदी के जागरूक और प्रतिबद्ध समर्थक माने जाते हैं। वे कुशल कवि, सूझ–बूझ वाले संपादक तथा अच्छे गद्य लेखक हैं। नसीनू स्थित तारा प्रेस के स्वामी हैं तथा 'भारतीय उपनिवेश : फिजी', 'फिजी गल्पिका', 'गुप्त शक्तियां' तथा 'मृदुला' आदि कृतियों के लेखक हैं।

जोगिन्दर सिंह : श्री जोगिन्दर सिंह ने गिरमिट जीवन तथा फिजी की समस्याओं को लेकर कई उपन्यास लिखे। 'सबेरा', 'धरती मेरी माता', 'करवट', 'सात समंदर पार', 'मेरा देश मेरे लोग' उनकी प्रसिद्ध गद्य कृतियां हैं। इनकी कविताओं का संग्रह 'यादों की खुशबू' नाम से प्रकाशित हुआ है।

बाबू राम शर्मा 'अरुण' : लंबासा निवासी बाबूराम 'अरुण' मूलतः हिंदी अध्यापक हैं। 'भुलई भगत' तथा 'मिस मालती' नाम से भी अरुण जी रचना करते रहे हैं। इनकी रचनाएं प्रायः हास्य व्यंग्यपूर्ण हैं और हिंदी पत्रों में निरंतर होती रही हैं।

ब्रिज विलास लाल : प्रो. ब्रिज वी. लाल के अध्ययन का क्षेत्र मुख्य रूप से फौजी का इतिहास है और उनके अनेक शोध परक ग्रंथ प्रकाशित हैं। उनकी मिस्टर तुलसीज़ स्टोर, अ फीजियन जर्नी, चलो जहाजी, आन अ जर्नी, न्यू इन्डेंबर इन फिजी, गिरमिटिया : द ओरिजन ऑफ फिजी इंडियंस ब्रोकन बेब्स, अ हिंदी ऑफ फिजी आइलैंड, इन द टवेनटिएथ सेंचुरी, आन द अदर साइड ऑफ मिडनाइट : अ फिजी जरनी, उनकी चर्चित कृतियाँ हैं। 'मारित' नामक उपन्यासिका उनकी 'फिजी हिंदी' में लिखी प्रकाशित कृति है और फिजी में पर्याप्त चर्चित रही है।

महेन्द्र चंद्र शर्मा 'विनोद' : महेन्द्र चंद्र शर्मा 'विनोद' का जन्म 1921 ई. में हुआ। उर्दू, हिंदी तथा अंग्रेजी भाषाओं के ज्ञाता थे तथा लेखक, कवि और पत्रकार के रूप में फिजी में विख्यात हैं। 1982–1986 ई. तक फिजी के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हिंदी साप्ताहिक 'शांतिदूत' का संपादन किया तथा अनेक हिंदी लेखकों को उन्होंने प्रोत्साहित किया। उन्होंने कविताएं तथा लेख आदि तो लिखे ही उनका सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान 'शांतिदूत' में नियमित रूप से तिरलोक तिवारी के नाम से 'थोरा हमरो भी तो सुनो' स्तंभ के अंतर्गत फिजी हिंदी शैली में देश तथा समाज की समस्याओं पर व्यंग्य लेखन था जो पाठकों के मध्य विशेष लोकप्रिय हुआ।

राघवानंद शर्मा : आपका जन्म सिंगातोका में 1947 ई. में हुआ। स्वाध्याय से हिंदी भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया और हिंदी प्रेमियों के मध्य सम्मानित लेखक के रूप में जाने गए। जागृति पत्र के संपादक रहे; सूचना प्रसारण मंत्रालय से प्रकाशित फिजी वृत्तांत तथा शंख पत्रिकाओं के संस्थापक संपादक भी थे। उन्होंने कई वीडियो फिल्में भी बनाई जिनमें 'दीवाली' अति चर्चित भी रही। संपादक होने के अतिरिक्त राघवानंद अच्छे कवि भी थे। उनकी भाषा शुद्ध व्याकरण सम्मत तथा प्रवाहमयी है।

राम नारायण गोविन्द : व्यवसाय से हिंदी अध्यापक, प्रतिबद्ध सूवा निवासी हिंदी सेवी, फिजी हिंदी साहित्य समिति सूवा के पूर्व महामंत्री शांतिदूत साप्ताहिक में नियमित लेखन।

रामानारायण : फिजी बीतीलेऊ द्वीप के 'बा' नगर में जन्म। भारत में छात्रवृत्ति पर रहकर हिंदी भाषा वा अध्ययन, फिजी के शिक्षा मंत्रालय में उच्च हिंदी अधिकारी के रूप में हिंदी पाठ्यक्रम एकक से लंबे समय तक जुड़े रहे और हिंदी की अनेक पाठ्यपुस्तकें तैयार कीं। हिंदी शिक्षण तथा हिंदी प्राध्यापक प्रशिक्षण का आयोजन व संयोजन किया। आकर्षक व्यक्तित्व के धनी, सौम्य, मधुरभाषी तथा शालीन रामानारायण ने अनेक हिंदी नाटकों में अभिनय तथा मंच पर कवि सम्मेलनों में भाग लिया।

रेमण्ड पिल्लई : फिजी के सूवा स्थित बहुजातीय राष्ट्रीय विश्वविद्यालय यूनीवर्सिटी ऑफ 8 साउथ पैसिफिक' के अंग्रेजी विभाग में प्रोफेसर थे तथा 'फिजी बात' में लिखे गये नाटक 'अधूरा सपना' के यशस्वी लेखक भी। गन्ने के खेतों में मजदूर के रूप में कार्य करनेवाले प्रवासी भारतीयों के जीवन को केन्द्र में रखकर उन्होंने अनेक कृतियां गद्य विद्या में लिखी हैं जो फिजी में और फौजी के बाहर आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में चर्चित और सम्मानित हुई।

सुब्रमणी : फिजी के हिंदी गद्य शिल्पियों में प्रो. सुब्रमणी का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता है जिन्होंने सर्वप्रथम 'फिजी हिंदी' में 'डउका पुरान' नामक बृहत् उपन्यास लिखकर 'फिजी हिंदी' को विश्वव्यापी साहित्यिक गरिमा दी।

हरनाम सिंह : 'हरनाम' हिंदी के सिख रचनाकारों में काव्य विधा में लिखने वाले फिजी के प्रतिष्ठित कवि हैं।

12वें विश्व हिंदी सम्मेलन के कार्यक्रमों का विवरण

12वें विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन 15 फरवरी 2023 को सुबह 9 बजे होगा। सुबह 11.30 बजे से 'हिंदी पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक' विषय पर संयुक्त सत्र का आयोजन किया गया है। दोपहर 2 बजे से 'गिरमिटिया देशों में हिंदी' तथा 'फिजी और प्रशांत क्षेत्र में हिंदी' विषय पर समानांतर सत्र आयोजित किये गये हैं। 4 बजे से ' सूचना प्रौद्योगिकी और 21वीं सदी की हिंदी' तथा 'मीडिया और हिंदी का विश्व बोध' विषय पर समानांतर सत्रों का आयोजन किया जायेगा। रात 7 बजे से भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा। 16 फरवरी 2023 को सुबह 9.30 बजे से 'भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक संदर्भ और हिंदी' तथा 'भाषाई समन्वय और हिंदी अनुवाद' विषय पर दो समानांतर सत्रों का आयोजन किया जायेगा। सुबह 11.30 बजे से 'हिंदी सिनेमा के विविध रूप : वैश्विक परिदृश्य' तथा 'विश्व बाजार और हिंदी' विषय पर समानांतर सत्रों का आयोजन किया जायेगा दोपहर 2.00 बजे से 'बदलते परिदृश्य में प्रवासी हिंदी साहित्य' तथा राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित' देश विदेश में हिंदी शिक्षण चुनौतियां और समाधान' विषय पर समानांतर सत्र का आयोजन किया गया है। रात 7.00 बजे से भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। शुक्रवार 17 फरवरी को सुबह 9.00 बजे से सत्रों की रिपोर्ट प्रस्तुत की जाएगी और उसे स्वीकृत किया जाएगा। सुबह 10.00 बजे से सम्मान समारोह का आयोजन किया गया है।

विश्व हिंदी सम्मेलन की स्वर्णिम यात्रा

डॉ. संयुक्ता भुवन रामसारा

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन : प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन 10–14 जनवरी, 1975 को नागपुर, भारत में आयोजित किया गया था। सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्वावधान में हुआ। सम्मेलन के मुख्य अतिथि मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम थे जिनकी अध्यक्षता में मॉरीशस से आए एक प्रतिनिधिमण्डल ने भी सम्मेलन में भाग लिया था। इस सम्मेलन में 30 देशों के कुल 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सर शिवसागर रामगुलाम ने अपने भाषण में हिंदी के संबंध में कहा कि हिंदी की लोकप्रियता भारत में तो है ही लेकिन हमारे लिए इस भाषा की एक खास विशेषता है। सभी ने नागपुर सम्मेलन में यह देखा कि यूरोप, अमरीका, कनाडा, एशिया, आस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका के अनेक देशों से आए लोग किस प्रकार धारा–प्रवाह हिंदी में भाषण कर रहे थे। विदेशियों को भी इस बात की प्रसन्नता थी कि अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर वे अपने विचारों का आदान–प्रदान इस भाषा के माध्यम से कुशलतापूर्वक कर रहे थे। इस सम्मेलन ने हिंदी के प्रति जो कुछ शंकाएं लोगों के मन में थीं, उन्हें दूर किया गया और पहली बार उसी मंच से यह सिद्ध हुआ कि अंतरराष्ट्रीय धरातल पर पारस्परिक आदान–प्रदान के लिए हिंदी एक सर्वथा सशक्त एवं सक्षम भाषा है। उस सम्मेलन से हिंदी की गौरव वृद्धि के साथ–साथ एक विश्व हिंदी परिवार की कल्पना साकार हुई और पहली बार एक विपुल जन–समुदाय ने यह महसूस किया कि हिंदी के विकास तथा प्रचार की संभावनाएं अपार हैं। इस सम्मेलन में पारित किये गये मन्तव्य थे–

1. संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए।
2. वर्धा में अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना हो।
3. मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना हो।
4. विश्व हिंदी सम्मेलन को स्थायित्व प्रदान करने के लिए अत्यंत विचारपूर्वक एक योजना बनायी जाए।

दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन : यह सम्मेलन मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में 28–30 अगस्त 1976 को सम्पन्न हुआ था। इस सम्मेलन की आयोजक राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष मौरीशस के प्रधानमंत्री डॉ. सर शिवसागर रामगुलाम थे। इस सम्मेलन के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता भारत के तत्कालीन स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन मंत्री डॉ. कर्ण सिंह ने की थी। आभार प्रदर्शन मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर शिव सागर रामगुलाम ने किया था। सम्मेलन में भारत से 23 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने भाग लिया। भारत के अतिरिक्त सम्मेलन में 17 देशों के 181 प्रतिनिधियों ने भी हिस्सा लिया था।

तीसरा विश्व हिंदी सम्मेलन : तीसरा विश्व हिंदी सम्मेलन 28–30 अक्टूबर, 1983 को भारत की राजधानी दिल्ली में आयोजित हुआ। इसमें वसुधैव कुटुंबकम बोध वाक्य रखा गया। भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया था। सम्मेलन के लिए बनी राष्ट्रीय आयोजन समिति के अध्यक्ष तत्कालीन लोकसभा अध्यक्ष डॉ. बलराम जाखड़ थे। इसमें मॉरीशस से आए प्रतिनिधिमण्डल ने भी हिस्सा लिया जिसके नेता थे श्री हरीश बुधू। सम्मेलन के आयोजन में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा ने प्रमुख भूमिका निभायी। सम्मेलन में कुल 6566 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया जिनमें विदेशों से आए 260 प्रतिनिधि भी शामिल थे। हिंदी की सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा समापन समारोह की मुख्य अतिथि थीं। इस अवसर पर उन्होंने दो टूक शब्दों में कहा था कि ''भारत के सरकारी कार्यालयों में हिंदी के कामकाज की स्थिति उस रथ जैसी है जिसमें पहिये आगे की बजाय पीछे जोत दिये गये हों।''

चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन : 24 सितंबर, 1993 को मॉरीशस के पोर्ट लुई में हिंदी सम्मेलन आयोजित किया गया। इसका उद्घाटन मॉरीशस के प्रधानमंत्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने किया था। समापन समारोह की अध्यक्षता मॉरीशस के उपराष्ट्रपति रवींद्र परवरन ने की थी। 17 साल बाद मॉरीशस में एक बार फिर विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस बार के आयोजन का उत्तरदायित्व मॉरीशस के कला, संस्कृति, अवकाश एवं सुधार संस्थान मंत्री श्री मुकेश्वर चुनी ने सम्हाला था। उन्हें राष्ट्रीय आयोजन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। इसमें भारत से गए प्रतिनिधिमण्डल के नेता श्री मधुकर राव चौधरी थे। भारत के तत्कालीन गृह राज्यमन्त्री श्री रामलाल राही प्रतिनिधिमण्डल के उपनेता थे। सम्मेलन में मॉरीशस के अतिरिक्त लगभग 200 विदेशी प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। चौथे विश्व हिंदी सम्मेलन में सभी के आदर सत्कार का बहुत ध्यान दिया गया। यहाँ के मंत्री सभी प्रतिनिधियों से बहुत घुल–मिल गए थे।

पाँचवां विश्व हिंदी सम्मेलन : पाँचवां विश्व हिंदी सम्मेलन 1996 के साल 4–8 अप्रैल तक त्रिनिदाद एवं टोबैगो के पोर्ट ऑफ स्पेन में हुआ था। इसका उद्घाटन त्रिनिदाद एवं टोबैगो के प्रधानमंत्री वासुदेव पांडेय ने की था। इस सम्मेलन का विषय 'प्रवासी भारत और हिंदी' था। इस सम्मेलन के प्रमुख संयोजक हिंदी निधि के अध्यक्ष श्री चका सीताराम थे। भारत की ओर से इस सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिनिधिमण्डल के नेता अरुणाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री माता प्रसाद थे। इस सम्मेलन में प्रवासी भारतीय और हिंदी सहित जिन अन्य विषयों पर ध्यान केन्द्रित किया गया, वे थे – हिंदी भाषा और साहित्य का विकास, कैरेबियाई द्वीपों में हिंदी की स्थिति एवं कम्प्यूटर युग में हिंदी की उपादेयता। इस सम्मेलन में भारत से 17 सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल ने हिस्सा लिया। अन्य देशों के 257 प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए।

छठा विश्व हिंदी सम्मेलन : साल 1999 के सितंबर माह में (14–18 सितंबर) लंदन में हिंदी सम्मेलन संपन्न हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन भारत की विदेश राज्य मंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया ने किया। 'हिंदी और भावी पीढ़ी' इस सम्मेलन का मुख्य विषय था। यूके हिंदी समिति, गीतांजलि बहुभाषी समुदाय और बर्मिंघम भारतीय भाषा संगम द्वारा मिलजुल कर इसके लिए राष्ट्रीय आयोजन समिति का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष डॉ. कृष्ण कुमार और संयोजक डॉ. पोश गुप्त थे। प्रतिनिधिमण्डल के उपनेता प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. विद्यानिवास मिश्र थे। इस सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्व इसलिए है क्योंकि यह हिंदी को राजभाषा बनाये जाने के 50वें वर्ष में आयोजित किया गया था। यही वर्ष संत कबीर की छठी जन्मशती का भी था। सम्मेलन में 21 देशों के 700 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें भारत से 350 और ब्रिटेन से 250 प्रतिनिधि शामिल थे। इस सम्मेलन में अमरीका में विश्व हिंदी न्यास के रामदास चौधरी, दक्षिण अफ्रीका के. बी. रामविलास, पोलैंड की डॉ. दानिता स्वासीक, मॉरीशस के रामदेव धुरंधर, तजाकिस्तान के एच. रजारोव, फ्रांस के प्रो. एनीमोतो, ब्रिटेन की अचला शर्मा, चेक गणराज्य के डॉ. स्वतीस्लाव कोस्तिक, म्यांमार के ऊपागों और चीन के प्रो संग हांगवूनद को भी सम्मानित किया गया।

सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन : सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन सुदूर सूरीनाम की राजधानी पारामारियों में 5 जून से 9 जून, 2003 के मध्य हुआ था। सूरीनाम के राष्ट्रपति रोनाल्डो रोनाल्ड नेशियान ने सातवें सम्मेलन का शुभारंभ किया था। इक्कीसवीं सदी में आयोजित यह पहला विश्व हिंदी सम्मेलन था। सम्मेलन के आयोजक श्री जानकी प्रसाद सिंह थे। इसका केन्द्रीय विषय था 'विश्व हिंदी नई शताब्दी की चुनौतियाँ'। सम्मेलन में हिस्सा लेने वाले भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व विदेश राज्य मंत्री श्री दिग्विजय सिंह ने किया। सम्मेलन में भारत से 200 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इसमें 12 से अधिक देशों के हिंदी विद्वान व अन्य हिंदी सेवी सम्मिलित हुए। हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में दो बातों पर ध्यान दिलाया गया। पहला, हमारी सरकार संयुक्त राष्ट्रसंघ में इसे मान्यता दिलाए। दूसरे, सभी लोग सरकारी और रोजमर्रा के जीवन में हिंदी को अपनाएँ और अपने बच्चों और विदेशियों को हिंदी प्रयोग के लिए प्रोत्साहन दें।

आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन : 13–15 जुलाई 2007 को अमरीका के न्यूयार्क में आठवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन का उद्घाटन किया गया था। सम्मेलन का मुख्य विषय 'विश्व मंच पर हिंदी' था। आठवें सम्मेलन का उद्घाटन संयुक्त राष्ट्र के सभागार में हुआ था जिसमें स्वागत भाषण भारत के राजदूत रोनेन सेन ने दिया था। इसका आयोजन भारत सरकार के विदेश मंत्रालय द्वारा किया गया। न्यूयॉर्क में सम्मेलन के आयोजन से सम्बन्धित व्यवस्था अमेरिका की हिंदी सेवी संस्थाओं के सहयोग से भारतीय विद्या भवन ने की। इसके लिए एक विशेष जालस्थल (वेबसाइट) का निर्माण भी किया गया। इसे प्रभासाक्षी कॉम के समूह सम्पादक बालेन्दु शर्मा दाधीच के नेतृत्व में विकसित किया गया था।

नौंवा विश्व हिंदी सम्मेलन : नौवा हिंदी सम्मेलन 22–24 सितंबर 2012 को दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में हुआ था। 'भारत की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ' इस सम्मेलन का मुख्य विषय था। इस सम्मेलन में दक्षिण अफ्रीका के वित्त मंत्री प्रवीण गोवर्धन और विशेष अतिथि मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मुकेश्वर चुनी ने शिरकत की थी। इस सम्मेलन में 22 देशों के 600 से अधिक प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इनमें लगभग 300 भारतीय शामिल हुए। सम्मेलन में तीन दिन चले मंथन के बाद कुल 12 प्रस्ताव पारित किए गए और विरोध के बाद एक संशोधन भी किया गया।

दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन : दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन 10–12 सितंबर, 2015 को भारत की हृदयस्थली मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में हुआ था। जोहान्सबर्ग में हुए नौवें सम्मेलन में ही निर्णय लिया गया था कि अगला विश्व हिंदी सम्मेलन भारत में होगा पहली बार हिंदी भाषा पर केंद्रित इस सम्मेलन में 12 विषयों पर विचार हुआ। तीन दिन हुई अलग–अलग चर्चाओं के बाद इनसे जुड़े परिणाम भी सम्मेलन में पेश किए गए जिन पर अमल के लिए केंद्र सरकार द्वारा एक समीक्षा समिति बनाने की बात तय की गई। सम्मेलन में सरकार की ओर से यह आश्वासन दिया गया कि जो सिफारिशें आई हैं, उन पर हर संभव अमल होगा। तीन दिन चले इस सम्मेलन का समापन केंद्रीय गृहमंत्री राजनाथ सिंह ने किया। इस सम्मेलन में देश और विदेश के हिंदीसेवियों को विश्व हिंदी सम्मान से सम्मानित भी किया गया। विश्व हिंदी सम्मेलन के समापन समारोह में देश–विदेश के 34 हिंदी साहित्यकारों को विश्व हिंदी सम्मान प्रदान किया गया। इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत के एक प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र भोपाल में आयोजित 10वें विश्व हिंदी सम्मेलन के दौरान विदेशी तथा भारतीय विद्वानों और विचारकों को हिंदी भाषा के विस्तार से संबंधित विभिन्न विकल्पों पर विचार–विमर्श करने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ।

ग्यारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन : ग्यारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन विदेश मंत्रालय द्वारा मॉरीशस सरकार के सहयोग से 18–20 अगस्त, 2018 को मॉरीशस में आयोजित किया गया।

बारहवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन : यह 15–17 फरवरी, 2023 को फिजी के नादी शहर में आयोजित किया जा रहा है।

प्रधान संपादक
प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल
कार्यकारी संपादक
प्रो. विनोद कुमार मिश्र
समन्वयक संपादक
प्रो. कृपाशंकर चौबे
संपादन सहयोग
प्रो. चंद्रकांत एस. रागीट, प्रो. अनिल कुमार राय
प्रो. अवधेश कुमार, प्रो. अखिलेश कुमार दुबे
प्रो. प्रीति सागर, प्रो. शिरीष पाल सिंह
डॉ. जयंत उपाध्याय, डॉ. प्रियंका मिश्र
डॉ. सुनील कुमार, डॉ. योगेन्द्र बाबू
राजेश कुमार यादव
डॉ. अमित कुमार विश्वास
पवन कुमार, अंजलि हजगैबी बिहारी
पृष्ठ सज्जा
राजेश आगरकर
मुद्रक एवं प्रकाशक
विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली